

श्री सप्तर्षि पूजन

(श्री रंगलालजी कृत)

स्थापना (छप्पय)

प्रथम नाम श्रीमन्व, दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तृतिय मुनि श्री निचय, सर्वसुन्दर चौथो वर ॥
पंचम श्री जयवान, विनयलालस षष्ठम भनि ।
सप्तम जय मित्राख्य, सर्व चारित्र-धाम गनि ॥
ये सातों चारण-ऋद्धि-धर, करूँ तास पद थापना ।
मैं पूजूँ मन-वचन-काय करि, जो सुख चाहूँ आपना ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षीश्वराः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षीश्वराः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षीश्वराः ! अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषट् ।

(हरिगीतिका)

शुभ-तीर्थ-उद्भव-जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायकैं ।
भव-तृषा-कंद-निकंद-कारण, शुद्ध घट भरवायकैं ॥
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरेँ सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमनु-स्वरमन्व-निचय-सर्वसुन्दर-जयवान्-विनयलालस-जयमित्राख्य-
चारणर्द्धिधारि सप्तर्षिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखण्ड कदलीनन्द केशर, मन्द-मन्द घिसायकैं ।

तसु गंध प्रसरित दिग-दिगन्तर, भर कटोरी लायकैं ॥मन्वादि ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।
अति धवल अक्षत खण्ड-वर्जित, मिष्ट राजत भोग के ।

कलधौत-थारा भरत-सुन्दर, चुनित शुभ उपयोग के ॥मन्वादि ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
बहु-वर्ण सुवरण-सुमन आछै, अमल कमल गुलाब के ।

केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके ॥मन्वादि ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान नाना भाँति चातुर, रचित शुद्ध नये-नये।
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरट के थारा लये॥
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरे सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलधौत-दीपक जड़ित नाना, भरित गोघृत-सारसों।
अतिज्वलित जग-मग ज्योति जाकी, तिमिर नाशनहारसों॥मन्वादि.॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्-चक्र गन्धित होत जाकर, धूप दश-अंगी कही।
सो लाय मन-वच-काय शुद्ध, लगाय कर खेऊँ सही॥मन्वादि.॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं।
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर-भर लायकैं॥मन्वादि.॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-गन्ध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठौं द्रव्य-मिश्रित, अर्घ्य कीजे पावना॥मन्वादि.॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(घत्ता)

वन्दूँ ऋषिराजा, धर्म-जहाजा, निज-पर-काजा करत भले।
करुणा के धारी, गगन-विहारी दुःख-अपहारी भरम दले॥
काटत जम-फन्दा, भवि-जन कृदा, करत अनन्दा चरणन में।
जो पूजैं ध्यावैं, मंगल गावैं, फेर न आवैं भव-वन में॥

(पद्धरि छन्द)

जय श्रीमनु मुनिराजा महन्त, त्रस-थावर की रक्षा करन्त।
जय-मिथ्या-तम-नाशक पतंग, करुणा रस-पूरित अंग-अंग॥

जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पद-सेव करत नित अमर-भूप ।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन-समान ॥
जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तन में प्रकाश ।
जय विषय-रोध सम्बोध भान, परणति के नाशक अचल ध्यान ॥
जय जयहिं सर्वसुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगत-जाल ।
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज-परिणति में पायो विराम ॥
जय आनन्दधन कल्याणरूप, कल्याण करत सबकौ अनूप ।
जय मद-नाशन जयवानदेव, निरमद विरचित सब करत सेव ॥
जय जयहिं विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान ।
जय कृशित-काय तपके प्रभाव, छबि छटा उड़ति आनन्द दाय ॥
जय मित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र ।
जय चन्द्र-वदन राजीव नैन, कबहूँ विकथा बोलत न बैन ॥
जय सातों मुनिवर एक संग, नित गगन-गमन करते अभंग ।
जय आये मथुरापुर मँझार, तहँ मरी रोग को अति प्रसार ॥
जय-जय तिन चरणनि के प्रसाद, सब मरी देवकृत भई वाद ।
जय लोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़ हस्त ॥
जय ग्रीष्म-ऋतु पर्वत मँझार, नित करत अतापन योगसार ।
जय तृषा-परीषह करत जेर, कहूँ रंच चलत नहिं मन सुमेर ॥
जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनन्दकार ।
जय वर्षा-ऋतु में वृक्ष तीर, तहं अति शीतल झेलत समीर ॥
जय शीत-काल चौपट मँझार, कै नदी सरोवर तट विचार ।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं भटकत रोम कोय ॥
जय मृतकासन वज्रासनीय, गौदूहन इत्यादिक गनीय ।
जय आसन नानाभाँति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ॥